

ई-बुक के उपयोगिता पर पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में प्रासंगिक मूल्यों पर एक अध्ययन

पुखराज प्राज¹, रितिका धीवर²

¹ सहायक प्राध्यापक, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान, एसडीयू, नया रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

² विद्यार्थी, प्राध्यापक, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान, एसडीयू, नया रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश

ई-बुक का प्रयोग आज के डिजिटल युग में पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के क्षेत्र में अत्यंत प्रासंगिक हो गया है। यह अध्ययन ई-बुक की उपयोगिता, उनके लाभ, चुनौतियाँ तथा पुस्तकालयों में उनके समावेश से उत्पन्न मूल्य-परिवर्तन पर केंद्रित है। पारंपरिक मुद्रित पुस्तकों की तुलना में ई-बुक ने ज्ञान तक पहुँच को अधिक सुलभ, त्वरित और व्यापक बनाया है। ई-बुक का सबसे बड़ा लाभ यह है कि वे सुलभता और सुवाह्यता प्रदान करती हैं। उपयोगकर्ता कहीं भी और कभी भी इन्हें पढ़ सकते हैं। इसके अतिरिक्त, ई-बुक में खोज सुविधा, हाइपरलिंक, मल्टीमीडिया तत्व और इंटरैक्टिव फीचर्स होते हैं, जो सीखने की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाते हैं। पुस्तकालयों के लिए यह एक अवसर है कि वे सीमित भौतिक स्थान और संसाधनों के बावजूद अधिकाधिक सामग्री उपलब्ध करा सकें। हालाँकि, ई-बुक के प्रयोग में कुछ चुनौतियाँ भी हैं। कॉपीराइट और लाइसेंसिंग से जुड़े मुद्दे पुस्तकालयों के लिए जटिलता उत्पन्न करते हैं। इसके अलावा, डिजिटल विभाजन के कारण ग्रामीण या तकनीकी रूप से पिछड़े क्षेत्रों में ई-बुक का लाभ सभी तक नहीं पहुँच पाता। उपयोगकर्ताओं को ई-बुक पढ़ने के लिए उपयुक्त उपकरण और इंटरनेट की आवश्यकता होती है, जो हर किसी के पास उपलब्ध नहीं है। इस अध्ययन में यह भी पाया गया कि ई-बुक ने पुस्तकालयाध्यक्षों की भूमिका को पुनर्परिभाषित किया है। अब वे केवल संग्रह प्रबंधक नहीं, बल्कि डिजिटल संसाधनों के मार्गदर्शक और सूचना साक्षरता के प्रशिक्षक भी बन गए हैं।

मूल शब्द: ई-बुक, डिजिटल अधिकार प्रबंधन, अमेज़न, किंडल, ई-रीडर, ई-लर्निंग

प्रस्तावना

ई-बुक, इलेक्ट्रॉनिक बुक का संक्षिप्त रूप, मुद्रित पुस्तक का एक डिजिटल संस्करण है जिसे ई-रीडर, टैबलेट, स्मार्टफोन और कंप्यूटर जैसे इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों पर पढ़ा जा सकता है। पारंपरिक कागजी पुस्तकों के विपरीत, ई-पुस्तकें अमूर्त होती हैं और डाउनलोड करने योग्य फाइलों के रूप में उपलब्ध होती हैं, जिससे वे अत्यधिक पोर्टेबल और सुविधाजनक बन जाती हैं। वे भौतिक पुस्तकों की विषय-वस्तु की नकल कर सकती हैं या विशेष रूप से डिजिटल प्लेटफॉर्म के लिए बनाई जा सकती हैं, जिनमें अक्सर ऑडियो, वीडियो, हाइपरलिंक और इंटरैक्टिव सुविधाओं जैसे मल्टीमीडिया तत्व शामिल होते हैं। ई-पुस्तकों की अवधारणा 1970 के दशक की शुरुआत में प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग के साथ शुरू हुई, जिसका उद्देश्य सांस्कृतिक कृतियों को मुफ्त सार्वजनिक पहुँच के लिए डिजिटल रूप में संग्रहित करना था। हालाँकि, 2000 के दशक तक, अमेज़न किंडल जैसे उपकरणों के आगमन के साथ, ई-पुस्तकों को व्यापक लोकप्रियता नहीं मिली। ई-इक तकनीक का उपयोग करने वाले इन उपकरणों ने एक आरामदायक पठन अनुभव और पुस्तकों के विशाल पुस्तकालयों तक पहुँच प्रदान की, जिससे लोगों के पुस्तकें पढ़ने और खरीदने के तरीके में क्रांतिकारी बदलाव आया। ई-पुस्तकें विभिन्न प्रारूपों में उपलब्ध हैं, जिनमें EPUB, MOBI, AZW और PDF शामिल हैं, और प्रत्येक की अपनी अनुकूलता और विशेषताएँ हैं। EPUB व्यापक रूप से समर्थित है और इसमें रीप्लोएबल टेक्स्ट की सुविधा है, जिससे इसे विभिन्न स्क्रीन आकारों के अनुकूल बनाया जा सकता है। MOBI और AZW मुख्य रूप से Amazon Kindle द्वारा उपयोग किए जाते हैं, जबकि PDF निश्चित लेआउट बनाए रखता है, जो जटिल फॉर्मेटिंग वाले दस्तावेजों के लिए आदर्श है। पाठक टैबलेट, स्मार्टफोन और कंप्यूटर पर उपलब्ध समर्पित ई-रीडर या ऐप्स के माध्यम से ई-पुस्तकों तक पहुँच सकते हैं। फॉन्ट आकार, पृष्ठभूमि रंग और चमक को समायोजित करने का लचीलापन, विशेष रूप से दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए, पहुँच को बढ़ाता है। इसके अतिरिक्त, खोज

क्षमता, बुकमार्किंग, हाइलाइटिंग और नोट्स लेने जैसी सुविधाएँ ई-पुस्तकों को शैक्षणिक और व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए विशेष रूप से उपयोगी बनाती हैं। ई-पुस्तकों के उदय से महत्वपूर्ण लाभ हुए हैं। कम उत्पादन और वितरण लागत के कारण ये अक्सर मुद्रित पुस्तकों की तुलना में अधिक किफायती होती हैं। इनका पर्यावरणीय प्रभाव भी कम होता है, क्योंकि ये कागज, स्याही और भौतिक परिवहन की आवश्यकता को समाप्त कर देती हैं। ई-पुस्तकों ने प्रकाशन को लोकतांत्रिक बना दिया है, जिससे लेखकों को स्वयं प्रकाशन करने और Amazon Kindle Direct Publishing जैसे प्लेटफॉर्म के माध्यम से वैश्विक दर्शकों तक पहुँचने की अनुमति मिलती है। शिक्षा के क्षेत्र में, ई-पुस्तकों ने छात्रों को पाठ्यपुस्तकों और संसाधनों तक तुरंत पहुँच प्रदान करके, दूरस्थ और लचीले अध्ययन को संभव बनाकर, सीखने की प्रक्रिया को बदल दिया है। पुस्तकालयों ने डिजिटल उधार को अपनाया है, ओवरड्राइव और लिबी जैसी सेवाओं के माध्यम से ई-पुस्तकें उपलब्ध कराकर साहित्य और सूचना तक पहुँच का विस्तार किया है। अपने लाभों के बावजूद, ई-पुस्तकों को कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों पर लंबे समय तक पढ़ने से स्क्रीन की थकान एक चिंता का विषय हो सकती है, और कुछ पाठक भौतिक पुस्तक को हाथ में पकड़ने के स्पर्श अनुभव को याद करते हैं। डिजिटल अधिकार प्रबंधन (DRM) प्रतिबंध साझाकरण और मुद्रण को सीमित कर सकते हैं, जिससे स्वामित्व और लचीलेपन को महत्व देने वाले उपयोगकर्ता निराश हो सकते हैं। इसके अलावा, ई-पुस्तकों तक पहुँच संगत उपकरणों और कभी-कभी इंटरनेट कनेक्टिविटी पर निर्भर करती है, जो कम सेवा वाले क्षेत्रों में एक बाधा हो सकती है। फिर भी, ई-पुस्तक उद्योग निरंतर विकसित हो रहा है, जिसमें उन्नत ई-पुस्तकों में नवाचार शामिल हैं जिनमें मल्टीमीडिया और इंटरैक्टिव सामग्री, कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा संचालित व्यक्तिगत पठन अनुभव और डिजिटल पुस्तकालयों तक असीमित पहुँच प्रदान करने वाले सब्सक्रिप्शन मॉडल शामिल हैं। ई-पुस्तकें लिखित सामग्री को पढ़ने के हमारे तरीके में एक

महत्वपूर्ण प्रगति का प्रतिनिधित्व करती हैं। ये पाठकों और लेखकों दोनों के लिए अद्वितीय सुविधा, पहुँच और अवसर प्रदान करती हैं। यद्यपि ई-पुस्तकों पारंपरिक पुस्तकों का पूर्णतः स्थान नहीं ले सकतीं, फिर भी ई-पुस्तकों ने साहित्यिक जगत में एक स्थायी और विकसित स्थान बना लिया है, तथा आधुनिक पाठकों और डिजिटल युग की बदलती आवश्यकताओं के अनुरूप ढल रही हैं।

साहित्य समीक्षा

जकारिया इस्सा सालेह और अहमद शहर मशहूर (2015), ई-पुस्तकों बढ़ती रहेंगी और अस्तित्व में रहेंगी, क्योंकि यह बढ़ती इलेक्ट्रॉनिक दुनिया का हिस्सा बन रही है, और एकत्रित आंकड़ों के आधार पर, ऐसा प्रतीत होता है कि ई-पुस्तकों यहाँ स्थायी रूप से रहेंगी और यही बात कागज़ की किताबों के भविष्य के बारे में भी सच है। ये आंकड़े इस बात को लेकर आशावादी होने का एक कारण भी देते हैं कि भविष्य में ई-पुस्तकों और मुद्रित पुस्तकों दोनों एक साथ मौजूद रह सकती हैं, क्योंकि मुद्रित पुस्तकों की तुलना में ई-पुस्तकों जो सभी सुविधाएँ प्रदान करती हैं (सुविधा, सुवाह्यता और मल्टीमीडिया), फिर भी कुछ मूलभूत गुण हैं जिनकी जगह वे कभी नहीं ले पाएँगी। कुछ प्रतिभागियों द्वारा प्राप्त टिप्पणियों से पता चला कि अगर पुस्तकों को आईपैड या किंडल पर डाउनलोड किया जाए तो उन्हें प्रबंधित करना बहुत आसान होगा, वहीं कुछ अन्य पाठकों ने बताया कि डिजिटल पुस्तकों के साथ बातचीत करना उनके लिए थोड़ा मुश्किल है। कुछ अन्य ने संकेत दिया कि मुद्रित पुस्तकों में कुछ ऐसा है जिसे वे छोड़ नहीं सकते (जैसे, पुस्तक को अपने हाथों में पकड़ना और पृष्ठ को शारीरिक रूप से पलटना), जिसकी तुलना "स्क्रीन पर पिक्सेल" से नहीं की जा सकती। जो लोग अपनी किताबों को कागज़ पर स्याही से छपवाना पसंद करते हैं, उनके लिए ई-किताबों का पूरी तरह से मुद्रित किताबों की जगह ले लेना दुखद लगता है। कुछ प्रतिभागियों ने बताया कि इंटरनेट ने उन्हें इतनी ज़्यादा किताबों और संसाधनों से रूबरू करा दिया है कि वे उतनी तेज़ी से नहीं पढ़ पाते जितना वे पढ़ सकते हैं, और कुछ लोगों के लिए, हालाँकि डिजिटल किताबें कागज़ की प्रतियों जैसी दिखती हैं, उन्हें कागज़ की तरह डिज़ाइन या टाइपसेट नहीं किया जा सकता, और चाहे वे "उच्च रिज़ॉल्यूशन" वाली स्क्रीन पर कितनी भी प्रभावशाली क्यों न दिखें, वे भौतिक चीज़ों की बजाय चित्र ही रहेंगी। अन्य प्रतिभागियों ने बताया कि पढ़ने के लिए एकाग्रता की आवश्यकता होती है और कुछ ई-किताबों में मौजूद बेहद मनोरंजक विकर्षणों के साथ ऐसा करना मुश्किल है। कुछ अन्य पाठकों ने बताया कि डिजिटल किताबें तकनीक का एक अद्भुत रूप हैं, क्योंकि इसने किताबों को सस्ता और आम जनता के लिए व्यापक रूप से उपलब्ध कराया है। और यह समझाने की कोशिश में कि पिछले दो सालों में कुछ पाठक केवल ई-किताबें ही क्यों पढ़ रहे थे, कुछ ने बताया कि उन्हें टैबलेट/डिवाइस से सभी किताबें पढ़ने में मज़ा आता है, हालाँकि बाहर पढ़ना मुश्किल होता है, और कुछ का मानना है कि अपनी निजता की रक्षा करने का एक तरीका यह है कि "ट्रेन में मेरे बगल में बैठे व्यक्ति को पता नहीं चलेगा कि मैं क्या पढ़ रहा हूँ"। और कुछ ने तो यह भी बताया कि एक आदत बन चुकी है। जिन पाठकों ने कोई ई-पुस्तक नहीं पढ़ी, उनमें से कुछ ने बताया कि उनकी पसंदीदा भौतिक पुस्तकें हैं, जबकि कुछ ने बताया कि ई-पुस्तक खरीदने से होने वाली बचत की तुलना में टैबलेट की कीमत अपेक्षाकृत महंगी है।

राजेंद्र कुंभार (2018), ई-पुस्तकें एक महत्वपूर्ण पठन सामग्री हैं और इस प्रकार एलआईएस शोधकर्ताओं के लिए रुचिकर हैं। पुस्तकालय पेशेवरों के अलावा, अन्य विषयों जैसे प्रौद्योगिकी, शिक्षा, मनोविज्ञान, इंजीनियरिंग मीडिया, भाषा विज्ञान, वाणिज्य,

प्रबंधन, प्रकाशन उद्योग आदि के शोधकर्ता भी ई-पुस्तकों पर शोध करने में रुचि रखते हैं। यहाँ समीक्षा किए गए ई-पुस्तक शोध लेख पुस्तकालय विज्ञान की विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि ये 17 गैर-पुस्तकालय विज्ञान पत्रिकाओं में भी प्रकाशित हुए हैं। यह तथ्य इस बात की पुष्टि करता है कि ई-पुस्तकें वास्तव में अंतःविषयक घटना हैं। यहाँ समीक्षा किए गए साहित्य से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ई-पुस्तकें एक महत्वपूर्ण संचार माध्यम के रूप में बनी रहेंगी। साथ ही, यह याद रखना होगा कि मुद्रित पुस्तक भी अपना महत्व बनाए रखेगी। क्योंकि जैसा कि प्रौद्योगिकीविद् और मीडिया विशेषज्ञ बैलाटोर और नताले ने तर्क दिया है, मीडिया का इतिहास और सिद्धांत मुद्रित पुस्तक के लुप्त होने के विचार का समर्थन नहीं करता है।

सुसान के. सॉयर (2000), इलेक्ट्रॉनिक पुस्तक की परिभाषा अभी भी अनिश्चित है। सामग्री और देखने की तकनीक, दोनों ही ई-पुस्तक के घटक हैं। वर्तमान में, प्रदर्शन की गुणवत्ता एक महत्वपूर्ण घटक है और खुले मानकों का मुद्दा इसके भविष्य के विकास और अपनाने के लिए महत्वपूर्ण है। हालाँकि, सामग्री को नज़रअंदाज़ नहीं किया जाना चाहिए; मुद्रित पुस्तक एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक प्रतीक का प्रतिनिधित्व करती है और इलेक्ट्रॉनिक प्रारूप में संभावित मूल्यवर्धित कार्यों के बावजूद, उपयोगकर्ताओं द्वारा मनोवैज्ञानिक-सामाजिक स्वीकृति प्राप्त करने के लिए अच्छी इलेक्ट्रॉनिक पुस्तकों के विकास में पुस्तक की अलंकरणत्मकता को बनाए रखना एक महत्वपूर्ण अवधारणा है।

सेंथिलकुमारन पीरामनायगम और पार्थो प्रतिम सील (2020), मुद्रित पुस्तकों को उनके आसान उपयोग और पढ़ने के लिए अधिकतर पसंद किया जाता है। आतिथ्य और पर्यटन के छात्र और शिक्षक दोनों मुद्रित पुस्तकें पढ़ने में आनंद महसूस करते हैं। छात्र मुद्रित पुस्तकों द्वारा प्रदान किए गए समग्र शिक्षण अनुभव से अधिक संतुष्ट महसूस करते हैं। शिक्षक बुक मार्किंग, लेआउट और मुद्रित पुस्तक के डिज़ाइन की सुविधा के लिए मुद्रित पुस्तकों का उपयोग करना पसंद करते हैं। छात्र और शिक्षक दोनों का मानना है कि ई-पुस्तकें संग्रहीत करने और ले जाने में बहुत आसान हैं। दोनों भविष्य में ई-पुस्तकों का उपयोग करने की अधिक इच्छा रखते हैं। शिक्षकों का यह भी मानना है कि ई-पुस्तकों का उपयोग करना एक चलन है। शिक्षकों का ई-पुस्तक के उपयोग को बढ़ाने का अधिक इरादा है और भविष्य में भी ई-पुस्तकों का उपयोग करने का अधिक इरादा है।

ई-बुक का इतिहास

ई-बुक 20वीं सदी के मध्य में प्रायोगिक प्रोटोटाइप से विकसित होकर 2000 के दशक तक मुख्यधारा की डिजिटल पब्लिशिंग बन गई। इस विकास को प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग, CD-ROMs, PDFs और Amazon के Kindle जैसे नवाचारों से गति मिली। इनका इतिहास तकनीकी प्रगति और सुलभ, पोर्टेबल और इंटरैक्टिव पठन की ओर सांस्कृतिक बदलावों, दोनों को दर्शाता है। एंजेलो रुइज़ रोबल्स (1949), एक स्पेनिश शिक्षिका ने पहले स्वचालित रीडर प्रोटोटाइप का आविष्कार किया, जिसे छात्रों पर पाठ्यपुस्तकों का बोझ कम करने के लिए डिज़ाइन किया गया था। हालाँकि यह इलेक्ट्रॉनिक नहीं था, फिर भी इसे ई-रीडर्स का अग्रदूत माना जाता है। प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग (1971), माइकल हार्ट ने U.S. की स्वतंत्रता की घोषणा को डिजिटल किया, जिसने ई-बुक युग के जन्म को चिह्नित किया। उनका दृष्टिकोण साहित्य तक मुफ्त, वैश्विक पहुंच प्रदान करना था, जिसने डिजिटल पब्लिशिंग की नींव रखी। CD-ROMs: Microsoft Encarta जैसे विशाल पाठ संग्रहों के वितरण को संभव बनाया, जिससे डिजिटल पुस्तकालयों में क्रांति आ गई। Adobe PDF (1993): डिजिटल दस्तावेज़ प्रारूपों को मानकीकृत किया, जिससे

ई-बुक विभिन्न उपकरणों पर अधिक सुलभ और एक समान हो गई। शुरुआती ई-बुक व्यवसाय: Peanut Press जैसी कंपनियों ने 1990 के दशक के अंत में PDAs के लिए ई-बुक बेचीं, हालाँकि डॉट-कॉम क्रैश के कारण इनका प्रचलन सीमित रहा। Amazon Kindle (2007): ई-बुक के इतिहास में एक निर्णायक मोड़। Kindle के वायरलेस डाउनलोड और विशाल कैटलॉग ने ई-बुक को व्यापक रूप से लोकप्रिय बना दिया। Apple iPad (2010): मल्टीमीडिया क्षमताओं के साथ डिजिटल पठन का विस्तार किया, और विशेष ई-रीडर्स के साथ प्रतिस्पर्धा की। EPUB प्रारूप का उदय: ओपन-सोर्स और लचीला होने के कारण, EPUB प्रकाशकों और पुस्तकालयों के लिए प्रमुख प्रारूप बन गया। इंटरैक्टिव और मल्टीमीडिया ई-बुक: ऑडियो, वीडियो और हाइपरलिंक्स के साथ उन्नत, जो मुद्रित पुस्तकों से परे अनुभव प्रदान करती हैं। सब्सक्रिप्शन मॉडल: Kindle Unlimited और Scribd जैसी सेवाएँ असीमित पहुँच प्रदान करती हैं, जिससे उपभोग की आदतें बदल रही हैं। ई-बुक अब ज्ञान को सभी के लिए सुलभ बनाती हैं, और उन क्षेत्रों में पाठकों तक पहुँचती हैं जहाँ भौतिक पुस्तकालयों तक पहुँच सीमित है।

ई-बुक की वर्तमान उपयोगिता और आवश्यकता

डिजिटल युग में, ई-बुक इस बात का एक मुख्य हिस्सा बन गई हैं कि लोग ज्ञान तक कैसे पहुँचते हैं, उसे कैसे पढ़ते हैं और कैसे साझा करते हैं। इनकी उपयोगिता केवल सुविधा में ही नहीं है, बल्कि भौगोलिक, आर्थिक और सामाजिक सीमाओं के पार जानकारी को सभी के लिए सुलभ बनाने की इनकी क्षमता में भी है। जैसे-जैसे तकनीक शिक्षा, प्रकाशन और मनोरंजन के लिए पढ़ने के तरीकों को नया रूप दे रही है, ई-बुक छपी हुई किताबों का एक विकल्प मात्र न होकर—आधुनिक जीवन की एक आवश्यकता बन गई हैं। ई-बुक का सबसे महत्वपूर्ण लाभ इनकी सुलभता है। पारंपरिक किताबों के विपरीत, जिनके लिए भौतिक वितरण और भंडारण की आवश्यकता होती है, ई-बुक को दुनिया में कहीं से भी तुरंत डाउनलोड किया जा सकता है। यह विशेषता उन क्षेत्रों में विशेष रूप से मूल्यवान है जहाँ किताबों की दुकानों या पुस्तकालयों तक पहुँच सीमित है। दूरदराज के इलाकों में रहने वाले पाठक भी वही संसाधन प्राप्त कर सकते हैं जो शहरी केंद्रों में रहने वालों को मिलते हैं, जिससे ज्ञान तक पहुँच में असमानताएँ कम होती हैं (कुमार, कुमार, संगमन, और नीरज, n.d.)। इसके अलावा, ई-बुक पोर्टेबल होती हैं, जिससे लोग एक ही डिवाइस पर पूरी की पूरी लाइब्रेरी अपने साथ ले जा सकते हैं; यह उन छात्रों और पेशेवरों के लिए विशेष रूप से उपयोगी है जिन्हें कई किताबों या लेखों तक तुरंत पहुँच की आवश्यकता होती है। लागत-प्रभावी होना ई-बुक की एक और महत्वपूर्ण उपयोगिता है। डिजिटल संस्करण अक्सर अपने छपे हुए समकक्षों की तुलना में सस्ते होते हैं, जिससे वे व्यापक दर्शकों के लिए अधिक किफायती बन जाते हैं। Kindle Unlimited और Scribd जैसे सब्सक्रिप्शन मॉडल एक निश्चित मासिक शुल्क पर हजारों किताबों तक असीमित पहुँच प्रदान करके इनकी सामर्थ्य को और बढ़ाते हैं। शैक्षणिक संस्थानों के लिए, ई-बुक छपाई, शिपिंग और भंडारण से संबंधित खर्चों को कम करती हैं, जिससे स्कूल और विश्वविद्यालय अपने संसाधनों का अधिक कुशलता से उपयोग कर पाते हैं (चेल्सी और जोसेफ, 2022)। यह आर्थिक लाभ व्यक्तिगत और संस्थागत, दोनों ही संदर्भों में ई-बुक की आवश्यकता को रेखांकित करता है। ई-बुक अद्वितीय शैक्षणिक लाभ भी प्रदान करती हैं। कई डिजिटल पाठ्यपुस्तकों में इंटरैक्टिव (संवादात्मक) विशेषताएँ शामिल होती हैं, जैसे कि एम्बेडेड वीडियो, ऑडियो क्लिप, क्विज़ और हाइपरलिंक, जो सीखने के अनुभव को समृद्ध बनाती हैं। ये विशेषताएँ निष्क्रिय पठन को सक्रिय भागीदारी में बदल देती हैं,

जिससे विषय की गहरी समझ और उसे याद रखने की क्षमता बढ़ती है। इसके अतिरिक्त, ई-बुक अनुकूलन (customization) के विकल्प प्रदान करती हैं, जैसे कि फॉन्ट का आकार बदलना, पृष्ठभूमि का रंग बदलना और 'टेक्स्ट-टू-स्पीच' (लिखे हुए को बोलकर सुनाने) की सुविधा; ये सुविधाएँ विविध आवश्यकताओं वाले शिक्षार्थियों के लिए, जिनमें दृष्टिबाधित शिक्षार्थी भी शामिल हैं, इन्हें अधिक सुलभ बनाती हैं (रिफ़्त, 2025)। ई-बुक की यह अनुकूलनशीलता यह सुनिश्चित करती है कि शिक्षा अधिक समावेशी और व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप हो सके। पर्यावरणीय दृष्टिकोण से, ई-बुक कागज, स्याही और भौतिक शिपिंग की मांग को कम करके पर्यावरण की स्थिरता में योगदान देती हैं। पब्लिशिंग इंडस्ट्री ऐतिहासिक रूप से ऐसे प्रोसेस पर निर्भर रही है जिनमें बहुत ज़्यादा संसाधनों की ज़रूरत पड़ती है, लेकिन डिजिटल विकल्प किताबों के प्रोडक्शन से जुड़े कार्बन फुटप्रिंट को काफी हद तक कम कर देते हैं। जैसे-जैसे जलवायु परिवर्तन के बारे में दुनिया भर में जागरूकता बढ़ रही है, ई-बुक का पर्यावरण-अनुकूल स्वभाव उन्हें सस्टेनेबिलिटी के लक्ष्यों के साथ तालमेल बिठाने के लिए और भी ज़रूरी बनाता है (Chelsea & Joseph, 2022)। हालाँकि डिजिटल डिवाइसों को खुद भी ऊर्जा और सामग्री की ज़रूरत होती है, लेकिन कागज की खपत में लंबे समय तक होने वाली कमी ई-बुक को एक ज़्यादा पर्यावरण-अनुकूल विकल्प के तौर पर अपनाने के लिए एक मज़बूत तर्क पेश करती है। अपने कई फ़ायदों के बावजूद, ई-बुक में कुछ चुनौतियाँ भी हैं। स्क्रीन से होने वाली थकान एक आम समस्या है, क्योंकि डिजिटल डिवाइसों पर लंबे समय तक पढ़ने से आँखों पर ज़ोर पड़ सकता है और समझने की क्षमता कम हो सकती है। इसके अलावा, सभी पाठकों के पास भरोसेमंद डिवाइस या इंटरनेट कनेक्शन की सुविधा नहीं होती, जिससे उन्हें अपनाने में रुकावटें आ सकती हैं। कुछ लोगों को डिजिटल फॉर्मेट छपी हुई किताबों की तुलना में कम आकर्षक लगते हैं, और वे पन्ने पलटने के अनुभव को ज़्यादा पसंद करते हैं। ये सीमाएँ अलग-अलग पसंद और ज़रूरतों को पूरा करने के लिए डिजिटल और प्रिंट संसाधनों के बीच संतुलन बनाने के महत्व को उजागर करती हैं (Kumar et al., n.d.)। फिर भी, ई-बुक की कुल उपयोगिता और आवश्यकता से इनकार नहीं किया जा सकता। वे किफायती, सुलभ और इंटरैक्टिव सामग्री प्रदान करती हैं जो शिक्षा, मनोरंजन और पेशेवर विकास में सहायक होती हैं। ज्ञान को सभी तक पहुँचाने, पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव को कम करने और सीखने के अनुभवों को बेहतर बनाने में उनकी भूमिका यह सुनिश्चित करती है कि ई-बुक केवल एक तकनीकी नवीनता नहीं हैं, बल्कि आधुनिक सूचना तंत्र में एक महत्वपूर्ण साधन हैं। जैसे-जैसे दुनिया भर में डिजिटल साक्षरता का विस्तार जारी है, ई-बुक इस बात का एक अभिन्न अंग बनी रहेंगी कि समाज ज्ञान का उपभोग और आदान-प्रदान कैसे करता है।

भारत में ई-बुक रीडर्स और ई-बुक बाज़ार की स्थिति

हाल के वर्षों में भारतीय प्रकाशन उद्योग में एक महत्वपूर्ण बदलाव आया है, जिसमें ई-बुक और डिजिटल रीडिंग प्लेटफॉर्म तेज़ी से प्रमुख होते जा रहे हैं। भारत, जो पारंपरिक रूप से प्रिंट-प्रधान बाज़ार रहा है, ने इंटरनेट की बढ़ती पहुँच, स्मार्टफ़ोन के बढ़ते इस्तेमाल और सुलभ शैक्षिक संसाधनों की बढ़ती माँग के कारण डिजिटल फॉर्मेट को अपना लिया है। उद्योग की रिपोर्टों के अनुसार, 2022 में भारत के प्रकाशन क्षेत्र का मूल्य \$8 बिलियन से अधिक था, जिसमें ई-बुक की कुल बिक्री में लगातार बढ़ती हिस्सेदारी थी (KPMG, 2022)। यह बदलाव तकनीकी प्रगति और बदलते उपभोक्ता व्यवहार, विशेष रूप से युवा वर्ग के बीच, दोनों को दर्शाता है। Amazon Kindle और Rakuten Kobo

जैसे ई-बुक रीडर्स ने भारतीय बाज़ार में प्रवेश किया है, लेकिन मोबाइल-आधारित रीडिंग की तुलना में वे अभी भी एक सीमित वर्ग तक ही सीमित हैं। स्मार्टफोन और टैबलेट ई-बुक के इस्तेमाल में हावी हैं क्योंकि वे ज्यादा किफायती हैं और आसानी से उपलब्ध हैं। समर्पित ई-रीडर्स, जो शहरी पेशेवरों और शौकीन पाठकों के बीच लोकप्रिय हैं, को महानगरों के बाहर लागत और सीमित वितरण की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है (Statista, 2024)। फिर भी, ई-बुक रीडर्स में खोज की रुचि बढ़ी है, जिससे पता चलता है कि जैसे-जैसे ये डिवाइस ज्यादा किफायती और स्थानीय भाषाओं में उपलब्ध होंगे, इनके बारे में जागरूकता और इन्हें अपनाने का चलन बढ़ सकता है। भारत के ई-बुक बाज़ार की एक मुख्य विशेषता क्षेत्रीय भाषाओं में सामग्री का बढ़ता चलन है। हिंदी, तमिल, तेलुगु और बंगाली जैसी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं के साथ, प्रकाशकों ने विविध दर्शकों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए क्षेत्रीय शीर्षकों को तेजी से डिजिटल रूप दिया है। यह चलन ऐसे देश में बहुत महत्वपूर्ण है जहाँ भाषाई विविधता ही पढ़ने की आदतों को आकार देती है। क्षेत्रीय भाषाओं की ई-बुक्स न केवल पहुँच को व्यापक बनाती हैं, बल्कि सांस्कृतिक आख्यानों को भी डिजिटल रूप में सुरक्षित रखती हैं (Nielsen India, 2023)। स्थानीय भाषाओं की सामग्री की माँग को डिजिटल साक्षरता और शिक्षा को बढ़ावा देने वाली सरकारी पहलों से भी बल मिला है। भारत में ई-बुक को अपनाने का सबसे बड़ा प्रेरक शिक्षा ही बनी हुई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 ने डिजिटल संसाधनों पर जोर दिया, और स्कूलों तथा विश्वविद्यालयों को अपने पाठ्यक्रम में ई-बुक्स को शामिल करने के लिए प्रोत्साहित किया। डिजिटल पाठ्यपुस्तकें छात्रों और संस्थानों के लिए लागत कम करती हैं, साथ ही इनमें एम्बेडेड वीडियो, क्विज़ और हाइपरलिंक जैसी इंटरैक्टिव सुविधाएँ भी मिलती हैं। ये नवाचार सीखने के अनुभव को बेहतर बनाते हैं और शिक्षा को ज्यादा समावेशी बनाते हैं, विशेष रूप से उन छात्रों के लिए जिन्हें विशेष पहुँच (accessibility) संबंधी ज़रूरतों की आवश्यकता होती है (Riffat, 2025)। शैक्षिक प्रकाशन क्षेत्र, जिसका मूल्य 2022 में \$4.5 बिलियन था, ने देखा है कि इसकी लगभग एक-तिहाई आय डिजिटल प्रारूपों से प्राप्त हुई है, जो शैक्षणिक संदर्भों में ई-बुक्स की आवश्यकता को रेखांकित करता है। भारत में बाज़ार के खिलाड़ियों में घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय, दोनों तरह के प्रकाशक शामिल हैं। रूपा पब्लिकेशन्स, एस. चांद और हार्परकोलिनस इंडिया जैसी कंपनियों ने अपने डिजिटल कैटलॉग का विस्तार किया है, जबकि अमेज़न जैसे वैश्विक प्लेटफॉर्म वितरण पर हावी हैं। किंडल अनलिमिटेड और स्टोरीटेल जैसी सब्सक्रिप्शन सेवाओं को लोकप्रियता मिली है, जो विशाल पुस्तकालयों तक किफायती पहुँच प्रदान करती हैं। स्व-प्रकाशन प्लेटफॉर्म भी स्वतंत्र लेखकों को सीधे पाठकों तक पहुँचने में सक्षम बनाते हैं, जिससे पारंपरिक प्रकाशन परिदृश्य का स्वरूप बदल रहा है (PwC India, 2023)। प्रकाशन के इस लोकतंत्रीकरण ने विविध आवाज़ों को डिजिटल क्षेत्र में फलने-फूलने के अवसर प्रदान किए हैं। इन प्रगतियों के बावजूद, चुनौतियाँ बनी हुई हैं। स्क्रीन से होने वाली थकान और अधिक उम्र के पाठकों में मुद्रित सामग्री के प्रति प्राथमिकता, इसके अपनाने की गति को सीमित करती है। पायरेसी (साहित्यिक चोरी) एक बड़ी चिंता बनी हुई है, जो प्रकाशकों और लेखकों की आय को नुकसान पहुँचाती है। इसके अलावा, इंटरनेट पहुँच और उपकरणों की सामर्थ्य में असमानताएँ ग्रामीण क्षेत्रों में इसके प्रसार में बाधा डालती हैं, जहाँ मुद्रित सामग्री का ही वर्चस्व बना हुआ है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए प्रकाशकों, नीति निर्माताओं और प्रौद्योगिकी प्रदाताओं के समन्वित प्रयासों की आवश्यकता है, ताकि डिजिटल संसाधनों तक सभी की समान पहुँच सुनिश्चित की जा सके। भारत में ई-बुक

पाठकों और ई-बुक बाज़ार की स्थिति एक गतिशील और विकसित होते हुए पारिस्थितिकी तंत्र को दर्शाती है। यद्यपि विशेष ई-रीडर्स अभी भी एक विशिष्ट वर्ग तक ही सीमित हैं, मोबाइल-आधारित उपभोग यह सुनिश्चित करता है कि डिजिटल पठन व्यापक रूप से प्रचलित हो। क्षेत्रीय भाषाओं में प्रकाशन, शिक्षा के साथ एकीकरण और सब्सक्रिप्शन मॉडल इस क्षेत्र के विकास को गति प्रदान कर रहे हैं, जिससे ई-बुक्स उत्तरोत्तर अपरिहार्य होती जा रही हैं। 120 मिलियन से अधिक उपभोक्ताओं और निरंतर विस्तृत होते डिजिटल बुनियादी ढाँचे के साथ, भारत का ई-बुक बाज़ार निरंतर विकास के लिए पूरी तरह तैयार है, जो अपनी साहित्यिक संस्कृति में परंपरा और नवाचार के बीच एक संतुलन स्थापित करता है।

लाइब्रेरीज़ का डिजिटल बदलाव

ई-बुक्स ने कलेक्शन मैनेजमेंट, एक्सेस मॉडल, यूज़र सर्विसेज़ और संरक्षण रणनीतियों को नया रूप देकर लाइब्रेरी और इन्फॉर्मेशन साइंस (LIS) में क्रांति ला दी है। लाइब्रेरीज़ अब प्रिंट-केंद्रित भंडारों से हटकर हाइब्रिड डिजिटल इकोसिस्टम की ओर बढ़ रही हैं, जिसमें एक्सेसिबिलिटी, समावेशिता और स्थिरता पर जोर दिया जा रहा है। ई-बुक्स की बढ़ती प्रासंगिकता ने दुनिया भर की लाइब्रेरीज़ के डिजिटल बदलाव की गति को तेज कर दिया है। पारंपरिक लाइब्रेरीज़, जिनकी पहचान कभी उनके भौतिक संग्रहों से होती थी, अब ऐसे डिजिटल भंडारों को अपना रही हैं जो लाखों संसाधनों तक तुरंत पहुँच प्रदान करते हैं। इस बदलाव ने भौगोलिक और समय की बाधाओं को तोड़ दिया है, जिससे यूज़र्स कहीं से भी और किसी भी समय शैक्षिक सामग्री तक पहुँच बना सकते हैं (Pujare, 2026)। लाइब्रेरीज़ ई-बुक्स, पत्रिकाओं और मल्टीमीडिया सामग्री तक पहुँच को सुव्यवस्थित करने के लिए तेजी से क्लाउड-आधारित प्लेटफॉर्म और एकीकृत खोज प्रणालियों को अपना रही हैं। ई-बुक्स ने LIS में संग्रह विकास की रणनीतियों को बदल दिया है। भौतिक सामग्री खरीदने में भारी निवेश करने के बजाय, लाइब्रेरीज़ अब प्रकाशकों और सब्सक्रिप्शन प्लेटफॉर्म के साथ लाइसेंसिंग समझौतों पर बातचीत करती हैं। इस बदलाव से लाइब्रेरीज़ अपने संग्रह का तेजी से विस्तार कर पाती हैं, साथ ही उनके भंडारण और रखरखाव की लागत भी कम हो जाती है। हालाँकि, इससे कॉपीराइट, डिजिटल अधिकार प्रबंधन और दीर्घकालिक संरक्षण से जुड़ी चुनौतियाँ भी सामने आती हैं (Jabeen, Rehman, & Malik, 2025)। लाइब्रेरियनों को यूज़र की माँग और लाइसेंसिंग की सीमाओं के बीच संतुलन बनाना होता है, ताकि डिजिटल संसाधनों तक सभी की समान पहुँच सुनिश्चित हो सके। ई-बुक्स को शामिल करने से यूज़र सेवाओं में सुधार हुआ है, क्योंकि अब पढ़ने के लिए अपनी पसंद के अनुसार अनुभव चुनने की सुविधा मिलती है। फॉन्ट का आकार बदलने, टेक्स्ट को बोलकर सुनाने (text-to-speech) और इंटरैक्टिव नोट्स जोड़ने जैसी सुविधाओं के कारण, ई-बुक्स दिव्यांग यूज़र्स के लिए भी अधिक सुलभ और समावेशी बन गई हैं। लाइब्रेरीज़ मोबाइल ऐप और डिजिटल उधार सेवाएँ भी प्रदान करती हैं, जिससे यूज़र दूर बैठे भी ई-बुक्स उधार ले सकते हैं। भारत में, 'नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ़ इंडिया' (NDLI) जैसी पहलों ने कई भाषाओं में उपलब्ध लाखों संसाधनों के लिए एक 'सिंगल-विंडो प्लेटफॉर्म' तैयार किया है, जिससे ज्ञान तक सभी की पहुँच आसान हो गई है (NDLI, 2026)। ये घटनाक्रम विभिन्न प्रकार के यूज़र समुदायों की ज़रूरतों को पूरा करने में ई-बुक्स की बढ़ती आवश्यकता को रेखांकित करते हैं। शैक्षिक लाइब्रेरीज़ में ई-बुक्स अब एक अनिवार्य संसाधन बन गई हैं, जहाँ छात्र और शोधकर्ता अपनी कार्यकुशलता और सुविधा के लिए डिजिटल संसाधनों पर निर्भर रहते हैं। मल्टीमीडिया से युक्त इंटरैक्टिव ई-बुक्स सीखने के

अनुभव को और भी समृद्ध बनाती हैं, जबकि उन्नत खोज सुविधाएँ अनुसंधान की उत्पादकता को बढ़ाती हैं। LIS पेशेवरों को अब अक्सर यूजर्स को डिजिटल साक्षरता का प्रशिक्षण देने का कार्य सौंपा जाता है, ताकि वे ई-बुक प्लेटफॉर्म का प्रभावी ढंग से उपयोग कर सकें (Tella & Oladokun, 2025)। यह भूमिका लाइब्रेरियनों की बदलती हुई जिम्मेदारियों को दर्शाती है, जो अब केवल लाइब्रेरियन ही नहीं, बल्कि शिक्षक और प्रौद्योगिकी सहायक (technology facilitators) की भूमिका भी निभा रहे हैं। LIS में संरक्षण के तरीके ई-बुक्स की वजह से भी विकसित हुए हैं। डिजिटल संरक्षण के लिए एक मजबूत बुनियादी ढाँचे की जरूरत होती है, जिसमें भरोसेमंद रिपॉजिटरी और मेटाडेटा मानक शामिल हों। प्रिंट सामग्री के विपरीत, ई-बुक्स को फॉर्मेट के पुराना हो जाने और लाइसेंस की समय सीमा समाप्त होने जैसे जोखिमों का सामना करना पड़ता है। पुस्तकालयों को लंबे समय तक पहुँच सुनिश्चित करने के लिए डिजिटल रिपॉजिटरी प्रमाणन और माइग्रेशन जैसी रणनीतियाँ अपनानी चाहिए (Frank, 2025)। साथ ही, ई-बुक्स कागज़ की खपत को कम करके और प्रकाशन के पर्यावरणीय प्रभाव को घटाकर स्थिरता में योगदान देती हैं।

अपने फायदों के बावजूद, ई-बुक्स LIS के लिए चुनौतियाँ पेश करती हैं। स्क्रीन से होने वाली थकान, पायरेसी, और उपकरणों तथा इंटरनेट कनेक्टिविटी तक असमान पहुँच जैसी बाधाएँ अभी भी बनी हुई हैं। इसके अलावा, व्यावसायिक प्लेटफॉर्म पर निर्भरता से एकाधिकार और सामर्थ्य के बारे में चिंताएँ पैदा होती हैं। LIS में भविष्य की दिशाएँ संभवतः ओपन एक्सेस प्रकाशन, सहयोगी डिजिटल रिपॉजिटरी, और उपयोगकर्ता अनुभवों को व्यक्तिगत बनाने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के एकीकरण पर केंद्रित होंगी (Tammaro, 2026)। ये नवाचार डिजिटल युग में पुस्तकालयों की भूमिका को सक्रिय अभिकर्ताओं के रूप में और अधिक परिभाषित करेंगे।

ई-पुस्तकों के संदर्भ में पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान का बदलता परिदृश्य

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान (एलआईएस) हमेशा से ही तकनीकी और सामाजिक परिवर्तनों के अनुरूप ढलने वाला विषय रहा है। ई-पुस्तकों के उदय ने पुस्तकालयों द्वारा संग्रहों के प्रबंधन, सेवाओं के वितरण और समाज में उनकी भूमिका की अवधारणा में गहरा बदलाव लाया है। ई-पुस्तकें केवल मुद्रित ग्रंथों के डिजिटल संस्करण मात्र नहीं हैं; वे सुलभता, समावेशिता, स्थिरता और अंतः क्रियात्मकता जैसे नए प्रासंगिक मूल्यों को समाहित करती हैं, जो सभी एलआईएस की नींव को नया आकार दे रहे हैं। सबसे स्पष्ट परिवर्तनों में से एक संग्रह विकास और प्रबंधन में है। परंपरागत रूप से, पुस्तकालय भौतिक अधिग्रहण, सूचीकरण और संरक्षण में भारी निवेश करते थे। ई-पुस्तकों के साथ, ध्यान लाइसेंसिंग समझौतों, सदस्यता मॉडलों और डिजिटल भंडारों की ओर स्थानांतरित हो गया है। यह परिवर्तन पुस्तकालयों को अपने संग्रहों का तेजी से विस्तार करने और संसाधनों तक त्वरित पहुँच प्रदान करने की अनुमति देता है, लेकिन यह कॉपीराइट, डिजिटल अधिकार प्रबंधन और दीर्घकालिक संरक्षण से संबंधित चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करता है (जाबीन, रहमान और मलिक, 2025)। पुस्तकालयाध्यक्षों को अब उपयोगकर्ता की मांग और लाइसेंस संबंधी प्रतिबंधों के बीच संतुलन बनाए रखना होगा, ताकि जटिल कानूनी ढाँचों को समझते हुए सभी को समान रूप से सामग्री उपलब्ध हो सके। ई-पुस्तकों के युग में पुस्तकालय सूचना प्रणाली (एलआईएस) में सुलभता का प्रासंगिक महत्व केंद्रीय हो गया है। डिजिटल प्रारूप उपयोगकर्ताओं को भौगोलिक और सामयिक बाधाओं को तोड़ते हुए, किसी भी समय और कहीं भी सामग्री तक पहुंचने की सुविधा

प्रदान करते हैं। समायोज्य फॉन्ट, टेक्स्ट-टू-स्पीच और इंटरैक्टिव एनोटेशन जैसी सुविधाएँ ई-पुस्तकों को दिव्यांग व्यक्तियों के लिए अधिक समावेशी बनाती हैं। पुस्तकालय दूरस्थ रूप से ई-पुस्तकों की डिलीवरी के लिए मोबाइल ऐप और क्लाउड-आधारित प्लेटफॉर्म को तेजी से अपना रहे हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि पाठक भौतिक शाखाओं में जाए बिना संसाधन उधार ले सकें (पुजारे, 2026)। यह समावेशिता सामाजिक समानता के अभिकर्ताओं के रूप में पुस्तकालयों के विकसित होते मिशन को दर्शाती है। शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में, ई-पुस्तकों ने उपयोगकर्ता सेवाओं को बदल दिया है। अकादमिक पुस्तकालय अब एम्बेडेड वीडियो, हाइपरलिंक और क्विज़ जैसी मल्टीमीडिया सुविधाओं से समृद्ध डिजिटल पाठ्यपुस्तकें प्रदान करते हैं। ये नवाचार सक्रिय अधिगम को बढ़ावा देते हैं और समझ को बेहतर बनाते हैं। साथ ही, पुस्तकालयाध्यक्ष डिजिटल साक्षरता प्रशिक्षकों के रूप में नई भूमिकाएँ निभा रहे हैं, जो छात्रों और शोधकर्ताओं को ई-पुस्तक प्लेटफॉर्म का प्रभावी ढंग से उपयोग करने में मार्गदर्शन करते हैं (टेला और ओलाडोकन, 2025)। यह बदलाव अंतःक्रियात्मकता के प्रासंगिक महत्व को रेखांकित करता है, क्योंकि ई-पुस्तकें निष्क्रिय उपभोग के बजाय सामग्री के साथ गतिशील जुड़ाव को सक्षम बनाती हैं। एक और महत्वपूर्ण बदलाव संरक्षण और स्थिरता में है। जहाँ मुद्रित संग्रहों को भौतिक भंडारण और संरक्षण की आवश्यकता होती है, वहीं ई-पुस्तकों को मेटाडेटा मानकों और विश्वसनीय भंडारों सहित मजबूत डिजिटल अवसंरचना की आवश्यकता होती है। लाइब्रेरियों को फॉर्मेट के पुराने हो जाने और लाइसेंस की समय-सीमा खत्म होने जैसे जोखिमों से निपटना चाहिए, और लंबी अवधि तक पहुँच सुनिश्चित करने के लिए माइग्रेशन और रिपॉजिटरी सर्टिफिकेशन जैसी रणनीतियाँ अपनानी चाहिए (Frank, 2025)। साथ ही, ई-बुक्स कागज़ की खपत कम करके और प्रकाशन के पर्यावरणीय प्रभाव को घटाकर स्थिरता में योगदान देती हैं। यह प्रासंगिक मूल्य LIS को पारिस्थितिक जिम्मेदारी के वैश्विक लक्ष्यों के साथ जोड़ता है। इन फायदों के बावजूद, चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं। स्क्रीन से होने वाली थकान, पायरेसी, और डिवाइस तथा इंटरनेट कनेक्टिविटी तक असमान पहुँच, इनके व्यापक रूप से अपनाए जाने में बाधा डालती हैं। इसके अलावा, व्यावसायिक प्लेटफॉर्म पर निर्भरता से एकाधिकार और सामर्थ्य के बारे में चिंताएँ पैदा होती हैं। इन मुद्दों को हल करने के लिए लाइब्रेरियन, नीति-निर्माताओं और प्रौद्योगिकी प्रदाताओं के बीच मिलकर किए जाने वाले प्रयासों की आवश्यकता है। LIS में भविष्य की दिशाएँ संभवतः ओपन एक्सेस प्रकाशन, सहयोगी डिजिटल रिपॉजिटरी, और उपयोगकर्ता अनुभवों को व्यक्तिगत बनाने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) पर जोर देंगी (Tammaro, 2026)। ये नवाचार LIS के भीतर ई-बुक्स के प्रासंगिक मूल्यों को और अधिक परिभाषित करेंगे, जिससे यह सुनिश्चित होगा कि डिजिटल युग में भी लाइब्रेरी प्रासंगिक बनी रहें। ई-बुक्स की प्रासंगिकता ने लाइब्रेरी और सूचना विज्ञान (LIS) को गहराई से बदल दिया है। पहुँच, समावेशिता, स्थिरता और इंटरैक्टिविटी जैसे प्रासंगिक मूल्यों को शामिल करके, ई-बुक्स ने संग्रह प्रबंधन, उपयोगकर्ता सेवाओं और संरक्षण प्रथाओं को नया रूप दिया है। हालाँकि चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं, लेकिन कुल मिलाकर यह रुझान लाइब्रेरियों के लिए एक अधिक गतिशील, न्यायसंगत और तकनीकी रूप से एकीकृत भविष्य की ओर इशारा करता है। ई-बुक्स केवल डिजिटल पाठ नहीं हैं; वे 21वीं सदी में LIS के मिशन और प्रथाओं की पुनर्कल्पना करने के लिए उत्प्रेरक का काम करती हैं।

उपसंहार

ई-बुक्स ने पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के क्षेत्र में एक नई दिशा प्रदान की है। उन्होंने ज्ञान तक पहुँच को अधिक लोकतांत्रिक, त्वरित और व्यापक बनाया है। यद्यपि कॉपीराइट, तकनीकी अवसरचना और डिजिटल विभाजन जैसी चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं, परंतु ई-बुक्स का महत्व लगातार बढ़ रहा है। पुस्तकालयों के लिए यह आवश्यक है कि वे ई-बुक्स को अपने संग्रह में संतुलित रूप से शामिल करें और उपयोगकर्ताओं को डिजिटल साक्षरता के लिए प्रशिक्षित करें। इससे न केवल सूचना तक पहुँच का विस्तार होगा, बल्कि पुस्तकालयों की प्रासंगिकता भी आधुनिक समय में बनी रहेगी। ई-बुक्स का प्रयोग पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में ज्ञान के प्रसार, संसाधनों के अनुकूलन और सूचना साक्षरता को बढ़ावा देता है। यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि ई-बुक्स केवल तकनीकी नवाचार नहीं, बल्कि सूचना समाज में मूल्य-परिवर्तन का प्रतीक हैं।

सन्दर्भ

1. Britannica. E-book: Definition, history, & facts. Encyclopaedia Britannica. <https://www.britannica.com/technology/e-book>
2. Hardy J. A history of eBooks. History Cooperative, 2024. <https://historycooperative.org/a-history-of-ebooks>
3. The Complete History of eBooks and Digital Reading. Ebook Friendly. <https://ebookfriendly.com/history-of-ebooks>
4. Chelsea D, Joseph V. E-books – An overview of its meaning, advantages and disadvantages. International Journal of Computer Science and Engineering, 2022. Retrieved from <https://intjces.org>
5. Kumar H, Kumar S, Sanggan W, Neeraj. Impact of e-books and digital libraries among students. International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT). Retrieved from <https://ijcrt.org>
6. Riffat J. eBooks in education: Benefits and challenges. eLearning Industry, 2025. Retrieved from <https://elearningindustry.com>
7. KPMG. Indian publishing industry report. KPMG India, 2022.
8. Nielsen India. Book market in India: Consumer trends and digital adoption. Nielsen Holdings, 2023.
9. PwC India. Entertainment and media outlook 2023–2027: India perspective. Price water house Coopers, 2023.
10. Riffat J. eBooks in education: Benefits and challenges. eLearning Industry, 2025. Retrieved from <https://elearningindustry.com>
11. Statista. E-book market in India – revenue and user data. Statista Research Department, 2024.
12. Frank RD. Structural assurance inflation: Perspectives on the value of trustworthy digital repository certification. Journal of Documentation, 2025. <https://doi.org/10.1108/JD-07-2025-0197>
13. Jabeen F, Rehman SU, Malik A. Copyright awareness and compliance: A systematic review of practices and emerging roles of the LIS community. Information Discovery and Delivery, 2025. <https://doi.org/10.1108/IDD-04-2025-0091>
14. National Digital Library of India (NDLI). NDLI project website. Ministry of Education, Government of India, 2026. Retrieved from <https://www.ndli.iitkgp.ac.in>
15. Pujare PC. The evolution and impact of digital libraries in the modern era. International Journal of Current Research, 2026. <https://doi.org/10.24941/ijcr.50426.04.2026>
16. Tella A, Oladokun BD. Digitization and emotional design of textbooks as determinants of reading habits of LIS students in Nigeria. Information and Learning Sciences, 2025. <https://doi.org/10.1108/ILS-09-2025-0182>
17. Frank RD. Structural assurance inflation: Perspectives on the value of trustworthy digital repository certification. Journal of Documentation, 2025. <https://doi.org/10.1108/JD-07-2025-0197>
18. Jabeen F, Rehman SU, Malik A. Copyright awareness and compliance: A systematic review of practices and emerging roles of the LIS community. Information Discovery and Delivery, 2025. <https://doi.org/10.1108/IDD-04-2025-0091>
19. Pujare PC. The evolution and impact of digital libraries in the modern era. International Journal of Current Research, 2026. <https://doi.org/10.24941/ijcr.50426.04.2026>
20. Tella A, Oladokun BD. Digitization and emotional design of textbooks as determinants of reading habits of LIS students in Nigeria. Information and Learning Sciences, 2025. <https://doi.org/10.1108/ILS-09-2025-0182>
21. Tammaro AM. Libraries in the digital age: Open access and AI integration. Library Management, 2026. <https://doi.org/10.1108/LM-02-2026-0115> (doi.org in Bing)